भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित शिक्षण विधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययनः वर्तमान समय में उपयोगिता एवं प्रासंगिकता

विनय कुमार

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।

प्रो0 ललित कुमार

संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

सार

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध परंपरा है। इस परंपरा को समृद्ध करने में प्राचीन कालीन शिक्षा व्यवस्था का अमूल्य योगदान रहा है । भारतीय ज्ञान परंपरा एक अविच्छिन्न, गतिशील और बहुआयामी प्रवाह है, जिसमें ज्ञान के अर्जन, संरक्षण एवं प्रसार की अनेक शिक्षण विधियाँ विद्यमान हैं। ये शिक्षण विधियाँ केवल सूचना के हस्तांतरण तक सीमित नहीं थीं, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास की समग्र प्रक्रिया पर केंद्रित थीं। वर्तमान समय में जब आधुनिक शिक्षा प्रणाली रोजगार उन्मुख पाठ्यक्रम के दबाव, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नैतिक मूल्यों के ह्रास जैसी चुनौतियों से जूझ रही है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा के शिक्षण विधियों /पद्धतियों की ओर पुनः अवलोकन करना अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन्हीं सभी चुनौतियों एवं संभावित समस्या के समाधान की दिशा में विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित तत्वों के महत्व को रेखांकित किया गया है। प्राचीन समय में शिक्षा का उद्देश्य संस्कार निर्माण, आत्मरक्षा एवं ज्ञानार्जन था। उस समय आदर्शवादी शिक्षा पद्धति प्रचलित थी, जिसमें गुरु, गुरुकुल/आश्रम में विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करके अपने शिष्यों को वेद और पुराण की शिक्षा के साथ-साथ युद्ध कला की जानकारी देते थे। उस समय अनेक विद्यालयों में पारंगत व्यक्ति अलग-अलग शिक्षण विधियों का प्रयोग कर अनेक प्रकार की विद्याएँ/ज्ञान अपने शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से सिखाते थे। प्राचीन काल में शिक्षा का आधार मौखिक परम्परा के रूप में श्रुति-स्मृति परंपरा से निर्मित हुआ। इसमें गुर, शिष्य को मौखिक ज्ञान देते, जिसको शिष्य कंठस्थ करके विभिन्न अवसरों पर उससे अंतर्दृष्टि प्राप्त करके समस्या के समाधान के साथ-साथ नवीन ज्ञान का सृजन किया करते थे। यह शोध-पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रचलित शिक्षण विधियों का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक भारत में शिक्षा के विभिन्न स्वरूपों जैसेः-गुरुकुल, वैदिक पाठशाला, बौद्ध-जैन शिक्षा पद्धति और नालंदा-तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में प्रयुक्त शिक्षण विधियों का अध्ययन किया गया है। साथ ही, इन पारंपरिक शिक्षण विधियों की आधुनिक शिक्षण विधियों से सह संबंध उनकी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता एवं उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला गया है।

शब्द कुँजीः भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षण विधियाँ, गुरुकुल, गुरु-शिष्य परंपरा, आधुनिक शिक्षा।

1. पृष्ठभूमिः

शिक्षा का अर्थ, उस पूर्णता की अभिव्यक्ति है, जो सभी मनुष्यों में पहले से ही विद्यमान है । मानव के भीतर यदि ज्ञान और शक्ति का अनंत स्रोत पहले से विद्यमान नहीं होता, तो हजारों प्रकार से प्रयास करके भी वह कभी ज्ञानी तथा शक्तिमान नहीं हो पाता । उस ज्ञान और शक्ति की अभिव्यक्ति में जो बाधाएं है, उन्हीं को दूर करने के विशिष्ट उपायों को ही शिक्षा कहा जाता है (विदेहात्मानन्द, 2009,पृ. -01)। स्वामी विवेकानंद जी मानते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके स्वभाव के अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए । एक अच्छे अध्यापक को शिष्यों की आवश्यकता के अनुसार उपदेशों में विविधता लानी

चाहिए (विदेहात्मानन्द, 2009,पृ. -78)। वही शिक्षा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक उन्नति का आधार होती है। भारतीय सभ्यता में शिक्षा और शिक्षक को सदैव उच्च स्थान प्राप्त रहा है, चुकी शिक्षक का कार्य शिक्षण करना है, जिसके लिए उन्हें उपयुक्त शिक्षण विधि का ज्ञान होना चाहिए। उपयुक्त शिक्षण विधि का चुनाव विषयवस्तु और विद्यार्थी दोनों को ध्यान में रख कर किया जाता है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास यथा बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक से जुड़ा हुआ था। समय के साथ-साथ औपनिवेशिक प्रभाव एवं पाश्चात्य शिक्षा मंडल के कारण भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन आए और पारंपरिक शिक्षण विधियाँ धीरे-धीरे लुप्त होती चली गईं। उन्हें अवैज्ञानिक शिक्षण विधियों की संज्ञा दे दी गई। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए 1835 में लार्डमैकाले ने प्रसिद्ध आलोक पत्र (उपदनजम) में यह तर्क दिया की भारतीय भाषाएं इतनी विकसित नहीं है कि वह पाश्चात्य विज्ञान एवं साहित्य के लिए उपयुक्त हों, प्राच्य विद्या यूरोपीय विद्या से बिल्कुल निकृष्ट है । उसके समय में ही शिक्षा पर होने वाले खर्च की कमी को पूरा करने के लिए अधोगामी निस्यंदन सिद्धांत लाया गया (चंद्र,2008, पृ.-109-111) । चूँकि उस समय भारतीय परंपरागत शिक्षा व्यवस्था गतिहीन हो चुकी थी जिसकी वजह से पाश्चात्य शिक्षा ने अपनी जड़े गहरी कर लीं । परिणामस्वरूप शिक्षा अधिक परीक्षा-केंद्रित, सूचना-प्रधान और यांत्रिक बनती चली गई। वर्तमान समय में जब वैश्विक स्तर पर शिक्षा में गुणवत्ता, मूल्य एवं कौशल विकास पर पुनः बल दिया जा रहा है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित शिक्षण विधियों की उपयोगिता और प्रासंगिकता का पुनर्मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो गया है। भारतीय सभ्यता में शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए उसे 16 संस्कारों में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया इनमें उपनयन और समावर्तन संस्कार प्राचीन शिक्षा व्यवस्था के महत्वपूर्ण आधार थी । चुकी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास पर बल दिया जाता था। गुरुकुल प्रणाली के अंतर्गत ही आश्रम व्यवस्था में शिष्य, गुरु के साथ आश्रम में रहते थे और उनके पर्यवेक्षण में शिक्षा प्राप्त करते। इसमें छात्र विद्या, शास्त्र विद्या, योग, संगीत, दर्शन और अन्य विषयों का अध्ययन करते थे। इसमें खास तौर पर व्यक्ति के नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इन्हीं गुरुकुल एवं आश्रम व्यवस्था से भारत में अनेक विश्व प्रसिद्ध मनीषी एवं चक्रवर्ती राजा हुए। गौतम बुद्ध ने भी गृह त्याग करने के बाद गुरु के सानिध्य में गए। उनके प्रथम गुरु आलार कलाम बने जहाँ से शिक्षा एवं साधना की शुरुआत कर वे विश्व के ज्ञानपूंज/प्रकाश पुंज के रूप में प्रसिद्ध हुए और बौद्ध धर्म "धम्म" की स्थापना की। चाणक्य, व्यास, वाल्मीकि, आर्यभट्ट, सुश्रुत यह सभी भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यवान वाहक रहे जिन्होंने स्वयं गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर गुरुकुल/आश्रम का निर्माण किया और अपने दार्शनिक विचार से भारतीय ज्ञान परंपरा के अलौकिक प्रकाशपूंज बने। इन सभी महान व्यक्तियों गुरुओं में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इन्होंने अनेक शिक्षण विधियों की रचना की और उनको परिष्कृत किया। जिसके माध्यम से शास्त्र, शस्त्र एवं शास्त्रार्थ विद्या को आसानी से सीखा जा सके। इस समय वेद एवं उपनिषद् की शिक्षा मौखिक थी जिससे प्रश्न-उत्तर, शंका-समाधान, व्याख्यान और वाद विवाद जैसे शिक्षण विधियां का आविर्भाव हुआ। वैदिक काल से लेकर मध्यकालीन भारत तक शिक्षण के विभिन्न तरीकों जैसे-मौखिक शिक्षण, गुरु-शिष्य परंपरा, प्रश्नोत्तर विधि, योग एवं ध्यान आधारित शिक्षा का प्रयोग किया जाता था। 21वीं सदी की शिक्षा व्यवस्था केवल विषयी ज्ञान तक सीमित न रहकर समग्र, मूल्यपरक एवं कौशल-आधारित शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः शिक्षा के केंद्र में लाने पर विशेष बल दिया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित शिक्षण विधियाँ आज भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं, विशेषकर अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में।

शोध पत्र का उद्देश्यः

क. भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित शिक्षण विधियों का विश्लेषण करना।

ख. इन विधियों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपयोगिता एवं प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

2. शिक्षण विधियों का ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं सैद्धांतिक आधार विवरण:

भारतीय शिक्षण विधियाँ सतत विकसित हुई हैं और इनका आधार वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, बौद्ध एवं जैन दर्शन तथा विभिन्न शास्त्रीय ग्रंथों में निहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षण का इतिहास अत्यंत समृद्ध और प्राचीन है, जो केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान तक सीमित न होकर शिष्य के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित था। यह परंपरा गुरु-शिष्य के आत्मीय संबंध पर आधारित थी, जहाँ ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक और लिखित रूप से हस्तांतरित किया जाता था। समय के साथ इन शिक्षण विधियों ने विभिन्न स्वरूप ग्रहण किए, जिनका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य वैदिक काल से लेकर विश्वविद्यालयों के उत्थान तक फैला हुआ है। इनका मूल उद्देश्य था 'विद्या' द्वारा 'अविद्या' का नाश करना, अर्थात ज्ञान प्राप्ति के माध्यम से अज्ञान को दूर करना। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21 वीं शताब्दी की प्रथम एवं महत्वपूर्ण शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य/उद्देश्य हमारे राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक अनिवार्य आवश्यकताओं को साकार करना है । यह नीति प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार की गई है । ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च लक्ष्य माना जाता था । प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि आत्म-ज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, पृ.-4)। इन्हीं भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित तत्वों को NEP & 2020 और NCF & 2023 की सहायता से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित करना वर्तमान समय में शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य है। इसके लिए भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न सैद्धांतिक आधार जैसे-समग्रता का सिद्धांत, गुरु-शिष्य परंपरा, आत्मानुभूति एवं आत्म-साक्षात्कार के अलावा उपनिषदों के ''तत् त्वम् असि" (तुम वही हो) और ''अहं ब्रह्मास्मि'' (मैं ब्रह्म हूँ) जैसे महावाक्यों में प्रतिबिंबित होता है। चार्वाक दर्शन जैसी भिन्न/नास्तिक दर्शन की विचारधाराओं के होने से यह सिद्ध होता है कि प्रश्न करने और तर्क करने की परंपरा भारतीय ज्ञान परंपरा में मौजूद थी।

2.1 वैदिक कालीन शिक्षण पद्धतिः श्रुति और स्मृति पर आधारित शिक्षाः

वैदिक काल में शिक्षा का मूल आधार 'श्रुति' (सुनना) और 'स्मृति' (याद रखना) था। इस युग की प्रमुख शिक्षण संस्था 'गुरुकुल' थी, जहाँ शिष्य अपने गुरु के साथ रहकर, उनके परिवार का हिस्सा बनकर ज्ञानार्जन करते थे। इस काल की प्रमुख शिक्षण विधियाँ- मौखिक विधि, प्रश्नोत्तर एवं संवाद विधि, अनुकरण विधि, स्वाध्याय और मनन विधि (पचौरी, 2023,पृ.- 6) आदि थी।

2.2 उत्तर-वैदिक और सूत्र कालः ज्ञान का व्यवस्थितीकरणः

इस काल में ज्ञान/शिक्षा को सूत्रों के रूप में संक्षिप्त और व्यवस्थित किया गया। व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष और कर्मकांड जैसे गूढ़ विषयों पर सूत्र-ग्रंथों की रचना हुई। इस काल की प्रमुख शिक्षण विधियाँ-सूत्र विधि, भाष्य और टीका विधि, वाद-विवाद (शास्त्रार्थ) विधि थी (पचौरी, 2023,पृ. -16)। इसके अलावा यज्ञ, सूक्त और छंदों के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। साथ ही वैदिक छंदों को गाकर याद कराया जाता था, जिससे स्मरण शक्ति बढ़ती थी

2.3 महाकाव्य, बौद्ध एवं जैन कालीन शिक्षण विधिः

इस काल में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की कथा-कहानियों के माध्यम से नैतिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। वहीं बौद्ध धर्म के आगमन ने शिक्षा को एक नया आयाम दिया जिसमें अष्टांगिक मार्ग का उद्देश्य मनुष्य के नैतिक आचरण, मानसिक विकास और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि को बढ़ाना है। बौद्ध काल में विभिन्न शासकों द्वारा बौद्ध मठ और विहार को महत्वपूर्ण शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित किया गया। जैन काल में शिक्षा दर्शन 'सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक आचरण' (त्रिरत्न) पर आधारित थी, जो आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। इस काल की शिक्षा मूल रूप से चरित्र निर्माण, अहिंसा, सत्य और नैतिकता की शिक्षा थी जो वर्तमान में बहुत ही प्रासंगिक है। इस काल की प्रमुख शिक्षण विधियाँ -कथा-प्रवचन विधि, सामूहिक शिक्षण विधि, व्यावहारिक-शिक्षा शिक्षण विधि, सार्वजनिक-शिक्षा शिक्षण विधि, प्रश्नोत्तर विधि (Dialogue Method) जो गुरु और शिष्य के बीच संवाद

आधारित थी। इसके अलावा संघ परंपरा की शिक्षण विधि जिसमें बौद्ध भिक्षु समूह में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे अधिक प्रचलित थी।

2.4 विश्वविद्यालयों का युग: नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला में प्रचलित शिक्षण विधि

प्राचीन भारत में तक्षशिला, नालंदा, ओदन्तपुरी, वल्लभी, कांचीपुरम और विक्रमशिला जैसे विश्वप्रसिद्ध शिक्षा के केंद्र दुनिया भर के विद्वानों और छात्रों को अपनी तरफ आकर्षित करते थे। ये संस्थाएँ वर्तमान समय में मौजूद विश्वविद्यालयों की भांति थीं, जहाँ विभिन्न विषयों की उच्च शिक्षा दी जाती थी। इस काल की सबसे बड़ी विशेषता बहु-विषयक शिक्षा थी जिसमें धर्म, दर्शन, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, राजनिति, विज्ञान जैसे विषयों की शिक्षा दी जाती थी। यह वर्तमान में भी प्रासंगिक है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की बहुविषयक शिक्षा को अंतर्दृष्टि प्रदान करता है । इस समय की प्रमुख शिक्षण विधियाँ-विशेषज्ञता आध ारित शिक्षण विधि, पुस्तकालयी शिक्षण विधि, सम्मेलन और परिसंवाद विधि, प्रायोगिक शिक्षण विधि, वाद-विवाद एवं तर्कशक्ति विधि, लिखित परीक्षा विधि, देशाटन, स्वाध्याय, संगोष्ठी आदि प्रचलित थीं ।

इस प्रकार हम यह कह सकते है की भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षण विधियाँ रटने पर नहीं, बल्कि समझने, आत्मसात करने और जीवन में उतारने पर बल देती थीं। इस पूरी व्यवस्था की रीढ़ गुरु-शिष्य परंपरा थी, जो न केवल ज्ञान बल्कि शिष्य के नैतिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास की अनिवार्य आवश्यकता को भी सुनिश्चित करती थी।

3. भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख शिक्षण विधियाँ: एक विस्तृत अवलोकन:

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी संकलित करना नहीं, बल्कि शिष्य का सर्वांगीण विकास करना था। यह परंपरा गुरु-शिष्य के आत्मीय और प्रत्यक्ष संबंध पर निर्भर थी, जहाँ ज्ञान को समग्रता से आत्मसात करने पर बल दिया जाता था। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्राचीन भारतीय ऋषि-मनीषियों द्वारा अनेक अनूठी और प्रभावी शिक्षण विधियों का आविर्भाव किया था, प्रमुख शिक्षण विधियाँ इस प्रकार हैं-

3.1 मौखिक विधि (श्रुति एवं स्मृति) :

यह प्राचीन भारत की सबसे आधारभूत शिक्षण पद्धति थी, इसे गुरुमुखी विधि भी कहते है । मुद्रण/छपाई कला के अभाव में ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित रखने का यही एकमात्र साधन था। श्रुति (सुनना) गुरु वैदिक मंत्रों या सूत्रों का सस्वर और शुद्ध उच्चारण करते थे और शिष्य उन्हें ध्यानपूर्वक सुनते थे। इस प्रक्रिया में श्रवणेंद्रिय को ज्ञान ग्रहण का मुख्य माध्यम माना जाता था। स्मृति (कंठस्थ करना) सुने हुए ज्ञान को शिष्य बार-बार दोहराकर कंठस्थ करते थे (भट्टाचार्या,2006,पृ.-19)।

3.2 श्रवण, मनन और निदिध्यासन :

ये वैदिक कालीन अध्ययन प्रक्रिया के तीन सोपान माने जाते थे । यह उपनिषदों की एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधि थी, जो ज्ञान को प्रज्ञा में बदलने पर केंद्रित थी। श्रवण, गुरु के उपदेशों को श्रद्धापूर्वक सुनना। मनन, सुने हुए ज्ञान पर एकांत में चिंतन और विचार करना, उसके सभी पहलुओं का विश्लेषण करना। निदिध्यासन, चिंतन-मनन के बाद प्राप्त सत्य को अपने आचरण और अनुभव का हिस्सा बना लेना, अर्थात ज्ञान को आत्मसात कर लेना (पचौरी, 2023,पृ.- 07)।

3.3 प्रश्नोत्तर एवं संवाद विधि :

उपनिषद अधिकतर प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए हैं। इस विधि में शिष्य अपनी जिज्ञासाओं और शंकाओं को गुरु के समक्ष प्रश्नों के रूप में रखते थे और गुरु संवाद के माध्यम से उनका समाधान करते थे। कठोपनिषद में नचिकेता और यम का संवाद इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद भी भारतीय ज्ञान परंपरा के उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती है । यह विधि छात्रों में तार्किक और विश्लेषणात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करती थी (शर्मा, 2004, पृ.- 26) ।

3.4 व्याख्या एवं दृष्टांत विधि:

जटिल और गूढ़ विषयों को आसान बनाने के लिए इस विधि का उपयोग किया जाता था। व्याख्या में गुरु किसी सूत्र या मंत्र की विस्तृत व्याख्या करते हुए उसके अर्थ और भाव को स्पष्ट करते थे। दृष्टांत विषय को और अधिक सरल बनाने के लिए गुरु उपमा, रूपक, कथाओं और दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरणों (दृष्टांतों) का प्रयोग करते थे।

3.5 **कथा कथन विधि:**

कहानी कथन विधि के द्वारा गूढ़ दार्शनिक और नैतिक आदर्शों को कहानियों, दृष्टांतों और पौराणिक ग्रंथ (रामायण, महाभारत) में निहित शिक्षा को सरल ढंग से समझाया जाता था। विष्णुशर्मा द्वारा रचित पंचतंत्र के अतिरिक्त हितोपदेश, जातक कथाएँ (बौद्ध) और विभिन्न पुराण इसी उद्देश्य से रचे गए। यह विधि स्मृति और समझ दोनों को बढ़ाती है। कथाओं के द्वारा नैतिक, सामाजिक और दार्शनिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। यह विधि मनोरंजक/रोचक होने के साथ-साथ अत्यंत प्रभावी भी थी, क्योंकि कहानियों के पात्र और घटनाएँ सीधे विद्यार्थियों के हृदय पर प्रभाव डालती थीं।

3.6 प्रदर्शन एवं अभ्यास विधि :

इस विधि से व्यावहारिक और क्रिया-प्रधान विषयों की शिक्षा दी जाती थी। कृषि, पशुपालन, सैन्य शिक्षा (धनुर्विद्या) और आयुर्विज्ञान जैसे कठिन विषयों में गुरु पहले उस क्रिया को स्वयं करके दिखाते थे (प्रदर्शन), फिर शिष्य उनका अनुकरण करते हुए निरंतर अभ्यास करते थे और उस कौशल में निपुणता प्राप्त करते थे।

3.7 तर्क विधि :

उत्तर-वैदिक काल में जब तर्कशास्त्र जैसे गूढ़ विषयों का विकास हुआ, तो इस विधि का प्रयोग बढ़ा। इसमें किसी भी सिद्धांत को स्थापित करने या उसकी सत्यता की पुष्टि के लिए पाँच पदों का उपयोग होता था। प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन, यह विधि उच्च स्तरीय बौद्धिक विमर्श के लिए प्रयोग की जाती थी। आगमन-निगमन विधि इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

3.8 वाद-विवाद या शास्त्रार्थ:

ज्ञान के परीक्षण और सत्य के अन्वेषण के लिए शास्त्रार्थ एक महत्वपूर्ण मंच था। इसमें दो या अधिक विद्वान किसी विषय पर सार्वजनिक रूप से तर्क-वितर्क करते थे। इससे ज्ञान का परिमार्जन तो होता ही था साथ ही विद्यार्थियों को भी विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और अपनी तर्क क्षमता को विकसित करने का संयोग मिलता था। तैत्तिरीय उपनिषद में कहा गया है- सा विद्या या विमुक्तये, अर्थात् वही विद्या है जो मुक्ति प्रदान करे (तैत्तिरीय उपनिषद, 3.1.)।

3.9 **कक्षा नायकीय पद्धति/अग्रशिष्य प्रणाली:**

प्राचीन काल से ही यह शिक्षण विधि शिक्षा के लिए अपनाई जाती थी परंतु औपचारिक रूप से बौद्ध काल में इसे अध्यापक शिक्षा के रूप में स्वीकृति मिली (भट्टाचार्या, 2006,पृ.-20)। उस समय गुरुकुलों में यह एक अनूठी व्यवस्था थी कि वरिष्ठ और मेधावी विद्यार्थी अपने से कनिष्ठ विद्यार्थियों को पढ़ाते थे। साथ ही इससे गुरु के अध्यापन कार्य में सहायता होती थी ।

3.10 स्वाध्याय :

गुरु से ज्ञान प्राप्त करने के बाद शिष्य का कर्तव्य समाप्त नहीं होता था। उसे स्वाध्याय के माध्यम से उस ज्ञान को निरंतर माँजते रहना होता था। समावर्तन संस्कार के समय गुरु शिष्य को जीवनपर्यंत स्वाध्याय करने का उपदेश देते थे।

3.11 गुरुकुल प्रणाली :

स्वामी विवेकानंद जी का कहना था कि गुरु- गृहवास, गुरु के साक्षात् संपर्क में रहने से ही सच्ची शिक्षा होती है (विदेहात्मानन्द, 2009, पृ.-72)। इसमें पाठ्यक्रम व्यक्तिगत रुचि और योग्यता के अनुरूप होता था। इस तरह की व्यवस्था विद्यार्थी को व्यक्तिगत मार्गदर्शन देने के उद्देश्य से अपनाई जाती थी। इसमें शिष्य और गुरु के बीच बहुत ही आत्मीय सम्बन्ध रहता था। स्वामी विवेकानन्द जी गुरु शिष्य के संबंध में लिखते हैं जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरी आत्मा में शक्ति का संचार होता है वह गुरु कहलाता है और जिसकी आत्मा में यह शक्ति संचारित होती है, उसे शिष्य कहते हैं (विदेहात्मानन्द, 2009, पृ.-62)। भारतीय ज्ञान परंपरा में इस तरह के उदहारण राम-वशिष्ठ, कृष्ण-सांदीपनी जैसी महान हस्तियाँ रहीं। इस परंपरा में शिष्य को पुत्र की भांति माना जाता था । शिष्यों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन किया जाता था यदि योग्यतम शिष्य पुत्र के स्थान पर दूसरा कोई होता तो गुरु अपने पुत्र के बजाय उस शिष्य पर विशेष ध्यान देते । इसी परंपरा के अनुसार गुरु द्रोणाचार्य ने अपने पुत्र अश्वथामा के स्थान पर योग्यतर शिष्य अर्जुन को श्रेष्ठ धनुर्धर बनाने के लिए संकल्प लिया था (भट्टाचार्या, 2006,पृ.-19)। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय गुरुकुल परंपरा के विकसित रूप थे।

3.12 योग एवं ध्यान आधारित शिक्षा

योग एवं ध्यान आधारित शिक्षा से मन की एकाग्रता बढ़ती थी इसमें इंद्रियों के निग्रह के लिए योगासन, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास किया जाता था । पतंजलि के योगसूत्र में अष्टांग योग का वर्णन शिक्षा में मानसिक अनुशासन के महत्व को दर्शाता है।

3.13 प्रार्थना:

भारतीय परंपरा में जब कोई भी कार्य का शुभारम्भ होता है, तब सबसे पहले प्रार्थना/स्तुति के माध्यम से हम सभी ईश्वर या इष्ट को आह्वान करते है। शिक्षा की शुरुआत करने से पूर्व प्रतिदिन की दिनचर्या में प्रार्थना का प्रचलन भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे अद्भुत एवं खुबसूरत स्वरूप रही है। विद्यार्थी जीवन में सुबह उठते ही सूर्य नमस्कार, धरती माता की स्तुति, स्नान करते समय स्तुति, स्नान के बाद अपने इष्टदेव की पूजा, फिर विद्याध्यन के पूर्व प्राथनाएं, पुन: भोजन करने से पूर्व प्रार्थना आदि का समावेश भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे अनोखी विशेषता है,

3.14 कला-आधारित अधिगम

संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला आदि केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति और ईश्वर की उपासना का साधन माना जाता था। कला के माध्यम से भावनात्मक और सृजनात्मक विकास होता था।।

3.15 सहगामी गतिविधि आधारित शिक्षण

सहगामी गतिविधि आधारित शिक्षण के बारे में कुन. फू. (450 ईस्वी पूर्व) ने कहा था कि मैं सुनता हूँ और भूल जाता हूँ, देखता हूँ और याद रखता हूँ । कुछ करता हूँ और समझता हूँ। विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने अध्ययन में यह पाया कि शिक्षण के दौरान सहगामी गतिविधियां विभिन्न रुचियों को विकसित करती है तथा पाठ्य विषयों में अधिक जिज्ञासा एवं रुचि पैदा करती है (शर्मा, 2004,पृ. -234)।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण विधियाँ बहुआयामी और मनोवैज्ञानिक थीं, जो शिष्य के बौद्धिक, चारित्रिक, नैतिक और व्यावहारिक, सभी पक्षों के विकास पर समान रूप से बल देती थीं। ये विधियाँ रटने के बजाय समझने, चिंतन करने और जीवन में उतारने को अधिक महत्व देती थीं, जिससे एक ज्ञानी ही नहीं, बल्कि एक विवेकशील और चरित्रवान नागरिक का निर्माण होता था

4. भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित शिक्षण विधियों की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित शिक्षण विधियों की प्रासंगिकता लगातार बढ़ रही है। ये शिक्षण विधियाँ केवल प्राचीन ज्ञान तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में भी सहायक सिद्ध हो रही हैं।ये विधियाँ विद्यार्थियों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जिसमें विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन और आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों पर बल दिया जाता है। शिक्षा का कार्य बालक को केवल संस्कृति से परिचित करना ही नहीं, अपितु उसे इस योग्य बनाना है कि वह संस्कृति के गुण-दोष को परख सके तथा गुणों को धारण करें (गुप्ता, अग्रवाल, 2011,पृ.-8)। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अंक-केंद्रित मूल्यांकन, रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम, प्रतिस्पर्धा का अत्यधिक दबाव और नैतिकता का अवमूल्यन से निकलने का दबाव है। इस संदर्भ में भारतीय शिक्षण विधियाँ नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा, व्यक्तिगत ध्यान एवं मार्गदर्शन, आलोचनात्मक चिंतन एवं प्रश्न करने की क्षमता, समग्र विकास पर पुन: बल, पर्यावरण चेतना एवं सामुदायिक भावना, बहु-विषयक दृष्टिकोण, सृजनात्मकता का विकास आदि के लिए समाधान प्रस्तुत करती हैं।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित शिक्षण विधियों की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उपयोगिता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान और संवर्धन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। NEP 2020 का उद्देश्य भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखते हुए शिक्षा व्यवस्था को परिमार्जित करना है। इस नीति के तहत, भारतीय ज्ञान परंपरा के निहित तत्वों को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जोड़ा जा सके। इसका उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मबोध का विकास करना भी है। NEP 2020 में योग,

आयुर्वेद, दर्शन, साहित्य और शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने पर जोर दिया गया है। यह नीति मानती है कि अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं में सुशिक्षित होने से शैक्षिक और सामाजिक उन्नति में लाभ मिलता है।

6. भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण विधियाँ और आधुनिक शिक्षण विधियाँ में संबंध:

वैसे तो जो वर्तमान में जिनका अस्तित्व है उनकी जड़े भूतकाल में ही विद्यमान है उसी तरह आधुनिक शिक्षण विधि यों की जड़ें भी भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ी हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण विधियाँ और आधुनिक शिक्षण विधियाँ अलग-अलग समय और संदर्भों में विकसित हैं, इनमें से कई भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख वाहिकाएँ हैं।

तालिका 1 :

आधुनिक समय में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विषयवार शिक्षण विधियों की सूची

क्रम सं0	विज्ञान	गणित	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान	भाषा
1	व्याख्यान विधि	प्रदर्शन विधि	व्याख्यान विधि	प्राकृतिक विधि/स्वाभाविक विधि
2	समस्या-आधारित शिक्षण विधि	अभ्यास विधि	समस्या समाधान विधि	संप्रेषणात्मक उपागम
3	परियोजना विधि	अन्योन्याश्रित समूह (जिगसॉ) विधि	परियोजना विधि	व्याकरण-अनुवाद विधि
4	प्रदर्शन विधि	घन समीकरण (क्यूबिंग) विधि	स्रोत विधि	प्रत्यक्ष विधि
5	जाँच -दृष्टिकोण विधि	आगमनात्मक-निगमनात्मक विधि	पर्यवेक्षित अध्ययन विधि	श्रव्य-भाषिक विधि
6	प्रयोगशाला या प्रायोगिक विधि	विश्लेषणात्मक-संश्लेषणात्मक विधि	सहयोगात्मक शिक्षण विधि	संचारी शिक्षण विधि
7	ह्यूरिस्टिक(खोजी)शिक्षण विधि	-	आगमनात्मक-निगमनात्मक विधि	परिस्थितिजन्य भाषा शिक्षण विधि
8	सहयोगात्मक शिक्षण विधि	-	कथाकथन एवं आख्यान	मौन मार्ग विधि (साइलेंट वे)
9	चर्चा विधि	-	-	समुदाय भाषा अधिगम
10	व्याख्यान-सह-प्रदर्शन विधि	-	-	भूमिका निर्वहन एवं नाट्य रूपांतरण

उपरोक्त सारणी में आधुनिक शिक्षा में प्रयुक्त विभिन्न शिक्षण विधियों की विषयवार सूची दी गई है (सिंह, 2024,पृ -5-6)। इनमें से कई शिक्षण विधियाँ एक से अधिक विषयों के लिए भी प्रयुक्त होती हैं जैसे : व्याख्यान विधि, आगमन निगमन विधि, परियोजना विधि, प्रदर्शन विधि आदि और कई शिक्षण विधियाँ ऐसी हैं जो कुछ विशेष विषयों के शिक्षण के लिए प्रयुक्त होती हैं जैसे- ह्यूरिस्टिक (खोजी) शिक्षण विधि एवं प्रयोगशाला विधि, यह शिक्षण विधि विज्ञान विषय के शिक्षण के लिए प्रयुक्त होती है । वही भाषा शिक्षण के लिए प्रयुक्त प्राकृतिक विधि, मौन मार्ग विधि, व्याकरण अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि भी केवल भाषा शिक्षण के लिए ही प्रयुक्त होते हैं । भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण विधियाँ और आधुनिक शिक्षण विधियाँ का शैक्षिक दर्शन मौलिक रूप से एक ही हैं। जहाँ एक तरफ भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण विधियों का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं बल्कि समग्र व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना था। वही आधुनिक शिक्षण विधियाँ का उद्देश्य विकास के उत्तरोतर क्रम में व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की ओर उन्मुख हो चुका है। कालांतर में आधुनिक शिक्षा में केवल कुछ ही शिक्षण विधियाँ प्रयुक्त होती थी। धीरे-धीरे शैक्षिक मनोविज्ञान एवं

शैक्षणिक तकनीक के विकास की वजह से शिक्षा शिक्षार्थी केंद्रित हो रही है। इसी क्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पुनः भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित तत्वों को शामिल किया गया है । भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण विधियाँ और आधुनिक शिक्षण विधियाँ में संबंध देखा जाए तो श्रुति/स्मृति की मौखिक विधि आज व्याख्यान और व्याख्यान-सह-प्रदर्शन विधि के रूप में विद्यमान है, वही श्रवण-मनन-निदिध्यासन विधियाँ आधुनिक जांच-दृष्टिकोण, खोजी तथा आगमन-निगमन विधियों के रूप में प्रतिस्थापित हो चुकी है। इसके अलावा प्रश्नोत्तर, संवाद, तर्क और शास्त्रार्थ आधुनिक चर्चा, सहयोगात्मक शिक्षण और जाँच दृष्टिकोण शिक्षण विधि के रूप में प्रतिबिंबित हैं। प्रदर्शन-अभ्यास, स्वाध्याय और कक्षा नायकीय पद्धति वर्तमान प्रायोगिक, स्रोत एवं सहकर्मी शिक्षण में रूपांतरित हो चुकी हैं, जबकि गुरु-शिष्य परंपरा आधुनिक मेंटरशिप का आधार है। योग, ध्यान और प्रार्थना आज माइंडफुलनेस और सकारात्मक अधिगम वातावरण के रूप में अपनाई जा रही हैं। इस प्रकार आधुनिक शिक्षण विधियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा की ही विकसित, वैज्ञानिक और समसामयिक अभिव्यक्ति हैं।

चुनौतियाँ एवं समाधानः

भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण विधियों को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था एवं पाठ्यक्रम से जोड़ने में कई वैचारिक, संरचनात्मक और क्रियात्मक चुनौतियाँ मौजूद हैं। एक तरफ आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्यतः विषय-केंद्रित, परीक्षा-उन्मुख और अंक आधारित है, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा अनुभवात्मक, मूल्य-आधारित और जीवनोपयोगी शिक्षण पर बल देती है। औपनिवेशिक प्रभाव के कारण पाश्चात्य शिक्षा मॉडल का वर्चस्व, शिक्षक-प्रशिक्षण में भारतीय शिक्षण विधियों की अपर्याप्त समझ, समय-सीमा और पाठ्यभार का दबाव, भाषा एवं माध्यम की कठिनाइयाँ (संस्कृत, पालि या प्राचीन भाषाओं) तथा पारंपरिक मौखिक और अनुभवात्मक मूल्यांकन की वस्तुनिष्ठता का आधुनिक मूल्यांकन प्रणाली से असंगत होना प्रमुख बाधाएँ हैं। इसके अलावा तकनीकी शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण भारतीय ज्ञान परंपरा को अप्रासंगिक मानने की प्रवृत्ति भी एक चुनौती है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए पाठ्यक्रम का समेकित पुनर्गठन करना होगा जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को अलग विषय के बजाय आधुनिक विषयों (विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा) में एकीकृत दृष्टिकोण से शामिल किया जाए। साथ ही शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय शिक्षण विधियों का व्यावहारिक समावेश कर बहुविधा एवं सतत् मूल्यांकन प्रणाली का विकास किया जाए और तकनीक के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा का डिजिटल रूपांतरण किया जाए। प्राचीन ज्ञान का सरल एवं समकालीन भाषाओं में अनुवाद करने के साथ शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप नीतिगत समर्थन आवश्यक है। इस प्रकार सुनियोजित प्रयासों द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा के बीच सार्थक समन्वय स्थापित किया जा सकता है।

निष्कर्षः

भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण विधियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी वे प्राचीन काल में थीं। आज भी गुरुकुल एवं सनातन संस्कृति से जुड़े हुए शैक्षणिक संस्थानों में इनका अनुप्रयोग होता है। हालाँकि इनको एकीकृत करने में कुछ चुनौतियाँ हैं, जिन्हें पाठ्यक्रम सुधार, शिक्षक-प्रशिक्षण, तकनीकी समन्वय और नीतिगत समर्थन से से दूर किया जा सकता है। NEP 2020 के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित तत्वों को पुनर्जीवित करने से शिक्षा प्रणाली और अधिक समग्र, मूल्य-आधारित और प्रभावी हो रही है। इससे विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने के साथ-साथ 21वीं सदी के कौशल और उनसे जुड़ी हुई चुनौतियों का सामना करने के लिए भी बेहतर ढंग से तैयार होने में मदद मिलेगी। भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित शिक्षण विधियाँ केवल पुरातन पद्धतियाँ नहीं हैं, बल्कि जीवन-मूल्यों, सामाजिक सद्भाव और आत्म-बोध से युक्त शिक्षा के सशक्त प्रतिमान हैं। वे मानवीय क्षमताओं के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित हैं। वर्तमान समय में, जब शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार के लिए या 'कमाने वाला' (Earner) बनाना रह गया है, वही इन परंपरागत शिक्षण विधियों व पद्धतियों में 'इंसान' (Human Being) बनाने की क्षमता

विद्यमान है। अब इन्हें आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से परखते हुए, युक्तिसंगत तरीके से समकालीन शिक्षा प्रणाली में समावेशित करने की आवश्यकता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने 'भारत केंद्रित शिक्षा' और 'समग्र शिक्षा' पर जोर देकर इस दिशा में एक सकारात्मक पहल की है। जिसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित सुधारों के लिए भी महत्वपूर्ण कदम उठायें गए हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की शिक्षण विधियाँ एक ऐसी शिक्षा का निर्माण कर सकती हैं जो न केवल दिमाग को ज्ञान से भरे, बल्कि हृदय को मूल्यों से, हाथों को कौशल से और आत्मा को चेतना से समृद्ध करें। यह केवल अतीत की ओर लौटना नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक स्थायी, संतुलित और मानवीय शैक्षिक मॉडल का पुनर्निर्माण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. भट्टाचार्य, जी0 सी0 (2006): अध्यापक शिक्षा, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
2. https%//www-researchgate-net/publication/356536063_Understanding_ the_ System_ of_ Education_in_the_ Ancient_Period_in_India 15 अगस्त 2025 को देखी गई।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति.(2020): शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार - https%//www-education-gov-in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0-pdf18 अगस्त 2025 को देखी गई।
4. चन्द्र, विपिन.(2008): आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
5. शर्मा,चंद्रधार.(1990): भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, पटना।
6. पाण्डेय, विमलचंद्र (2007): प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहबाद।
7. तैत्तिरीय उपनिषद्, शिक्षावल्ली, अनुवाद 11।
8. बृहदारण्यक उपनिषद्, 2.4.5: (श्रवण-मनन-निदिध्यासन का सिद्धांत)।
9. विदेहात्मानन्द, स्वामी (2009): शिक्षा का आदर्श. श्रीरामकृष्ण-विवेकानंद साहित्य, रामकृष्ण मठ नागपुर।
10. अमित, अंग्रेजों से पहले : भारत की शिक्षा व्यवस्था, हिंदी रूपांतरण (द ब्यूटीफुल ट्री), सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, वाराणसी।
11. शर्मा, सुभाष (2004): भारत में शिक्षा व्यवस्था: अवधारणाणा, समस्याएं एवं संभावनाएँ, वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली।
12. पचौरी, गिरीश.(2023): भारतीय शिक्षा का इतिहास. आर लाल पब्लिशर एवं डिस्ट्रीब्यूटर, मेरठ ।
13. https%//www-academia-edu/118479878/Module_for_Methods_of_Teaching_Final_upload_Sunil_BHU 5 जनवरी 2026 को देखी गई।
14. गुप्ता, एस एवं अग्रवाल जे.सी. (2011): उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली।